लोक सभा
वाद-विवाद का सारांश
(प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही)
शुक्रवार, 12 मार्च, 2010/21 फाल्गुन, 1931 (शक)
निधन संबंधी उल्लेख

लोक सभा

वाद-विवाद का सारांश
प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही

शुक्रवार, 12 मार्च, 2010 21 फाल्गुन, 1931 शक

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदया : मुझे सभा को अपने पूर्ववर्ती सहयोगी श्री नानाजी देशमुख के दुःखद निधन की सूचना देनी है।

श्री नानाजी देशमुख वर्ष 1977 से 1979 तक छठी लोक सभा के सदस्य रहे और उन्होंने उत्तर प्रदेश के बलरामपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। श्री नानाजी देशमुख वर्ष 1999 से 2005 तक राज्य सभा के नाम-निर्दिष्ट सदस्य भी रहे। पेशे से कृषक नानाजी देशमुख एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के गांवों में जनता के सहयोग और सहभागिता से सर्वतोमुखी विकास करके कायाकल्प करने के सपने को साकार करने के लिए कार्य किया। श्री नानाजी देशमुख ने सम्पूर्ण भारत में सरस्वती शिशु मंदिर खोले जो पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालयों की एक श्रृंखला थी। वह मध्य प्रदेश में दीन दयाल अनुसंधान संस्थान और चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के संस्थापक भी थे। वह भारत के इस पहले ग्रामीण विश्वविद्यालय के प्रथम कुलाधिपति भी रहे। श्री नानाजी देशमुख को वर्ष 1999 में पद्म विभूषण, वर्ष 2001 में नेशनल सिटीजन अवार्ड और वर्ष 2003 में जीवन गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से भी विभूषित किया।

श्री नानाजी देशमुख का निधन 94 वर्ष की आयु में 27 फरवरी, 2010 को चित्रकूट, मध्य प्रदेश में हुआ।

हम अपने इस मित्र के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं तथा मैं अपनी और इस सभा की ओर से शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करती हूँ।

तत्पश्चात् सदस्यगण कुछ क्षण के लिए मौन खड़े रहे।

Tribute to NANAJI DESHMUKH

from coffice@tata.com
to dridelhi1@gmail.com
date Fri, Mar 5, 2010 at 6:07 PM

Dear Mr. Mahajan,

Thank you for your email of March 4th. I am so sorry to know about the passing away of Nanaji.

I would like to send the following message as a tribute to him-

'Nanaji was that rare politician who evolved into a statesman and nation-builder. He greatly valued his connection to the grassroots and was devoted to finding indigenous solutions to problems of livelihood and sustained income creation for the forgotten poor. I was privileged to know him and will greatly cherish our association.'

With regards,

Yours sincerely,

Ratan N. Tata

shardhanjali1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:15 PM Page 76